ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(7): 59-62
www.allresearchjournal.com
Received: 01-05-2023
Accepted: 02-06-2023

संचिता गौड
शोधार्थी गृहविज्ञान, पटना विश्वविधालय, बिहार, भारत

डॉ० वंदना सिंह
विश्वविधालय आचार्य, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग, पटना विश्वविधालय, बिहार, भारत

Corresponding Author:
संचिता गौड
शोधार्थी गृहविज्ञान, पटना विश्वविधालय, बिहार, भारत

उच्च जोखिम गर्भावस्था : महिला सशक्तिकरण के मार्ग में एक प्रमुख बाधा

संचिता गौड एवं डॉ० वंदना सिंह

सारांश
शिक्षा, शारीरिक स्वास्थ्य और आर्थिक सुदृढ़ता महिला सशक्तीकरण के तीन स्तम्भ हैं। k किन्तु उच्च जोखिम गर्भावस्था से पीड़ित होने पर उनके ये तीनों स्तंभ ध्वस्त हो जाते हैं। आर्थिक स्वयत्तता एवं शिक्षा प्राप्ति इनका मार्ग भी स्वास्थ्य रूपी चौराहे से होकर गुजरता है। देखा गया है कि कम उम्र में विवाह एवं संतानोत्पत्ति करने से महिला का स्वास्थ्य और उनकी शिक्षा दोनों पर दुष्प्रभाव पड़ता है। प्रायः गर्भावस्था के दौरान जटिलतायें उत्पन्न होती है जिससे महिलाओं की या उनके गर्भस्थ शिशु की अक्सर जान भी चली जाती है। निश्चय ही गर्भावस्था के दौरान जिन बीमारियों से जच्च–बच्चा को क्षति पहुँचने की संभावना हो, उनकी समय रहते पहचान और उनका इलाज अति आवश्यक है। सरकार ने अपने दावों में गर्भावस्था के दौरान महिलाओं की पूरी जाँच एवं चिकित्सा की व्यवस्था उपलब्ध होने की बातें की है। किन्तु वास्तविकता में ऐसी स्थिति नहीं है। पटना के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च जोखिम गर्भावस्था की पहचान और इलाज की क्या व्यवस्था है, और महिलायें उससे कितना लाभ उठा पाती हैं इन्हीं बातों की जाँच पड़ताल के लिए हमनें पटना के आस–पास के क्षेत्रों की महिलाओं का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के परिणाम यह दिखाते हैं कि गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक प्रचलन इत्यादि के कारण लड़कियों का कम उम्र में विवाह हो जाना उच्च जोखिम गर्भावस्था का प्रमुख कारण है। अन्य महत्वपूर्ण कारण मोटापा, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, कम या अधिक उम्र में माँ बनना आदि।

कूट शब्द : शिक्षा, सर्वेक्षण, इलाज, गर्भावस्था, उच्च जोखिम

प्रस्तावना
एक महिला के जीवन में गर्भावस्था एक अनूठा अनुभव होता है। लेकिन उच्च जोखिम गर्भावस्था के कारण महिलाओं और उनके परिवार को तरह–तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आजादी के 75 साल बाद भी लड़कियों को लड़कों से नीचे का दर्जा दिया जाता है। वे आज भी महिला विरोधी अपराध में बहुत बड़ी संख्या में होते हैं। इन्हीं कारणों से महिला सशक्तीकरण आज हमारे राष्ट्र की सबसे अनिवार्य जरूरत है। इसकी आवश्यकता इसलिए है ताकि वे अपनी पढ़ाई, रोजगार, स्वास्थ्य, बच्चों की संख्या, इन सब के बारे में स्वयं निर्णय ले सके ना कि उनके ऊपर कोई–न–कोई अभिभावक बनकर फैसले करता रहे। इतने सशक्तीकरण को प्राप्त करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और अच्छा स्वास्थ्य आवश्यक है। शरीरम् आद्यम धर्म साधनः। स्वास्थ्य कमजोर रहने पर आर्थिक स्वतंत्रता अत्यंत मुश्किल हो जाती है। यही नहीं अस्वस्थ व्यक्ति अपने छोटे–छोटे काम की जरूरतों के लिए वह दूसरों पर निर्भर हो जाता है। इससे उसकी स्वायत्तता बाधित होती है।

शिक्षा, शारीरिक स्वास्थ्य और आर्थिक सुदृढ़ता महिला सशक्तीकरण के तीन स्तम्भ हैं। किन्तु उच्च जोखिम गर्भावस्था से पीड़ित होने पर ये तीनों स्तंभ ध्वस्त हो जाते हैं। गर्भावस्था के दौरान कई तरह की छोटी बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ होती है। अगर इस दौरान कोई जटिल स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो जाए, जो जच्चा–बच्चा के लिए घातक हो, तो उसे हाईरिस्क प्रेग्नेंसी (उच्च जोखिम गर्भावस्था) कहते हैं। लगभग 20 से 30 प्रतिशत महिलाओं में उच्च जोखिम गर्भावस्था का जोखिम देखने को मिलता है। इसके बड़े परिणाम महिला के स्वास्थ्य उनके जीवन और मानसिक स्थिति पर पड़ते हैं। एक बच्चे का नुकसान हो जाये और आगे माँ ना बनने की स्थिति आ जाए तो महिलाओं को सामाजिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। कई बार उच्चरक्तचाप, किडनी इत्यादि की समस्या होने पर अथवा उच्च जोखिम गर्भावस्था के कारण प्रसव के दौरान सिजेरियन

ऑपरेशन करना पड़ता है। इसके कारण महिला के स्वास्थ्य पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। साथ ही इसमें खर्च भी अधिक होता है। जो महिला के चिंता का कारण बन जाता है। इससे उन महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी आत्मग्लानि और सशक्तीकरण का अभाव पैदा हो जाते हैं।

साहित्य समीक्षा

Paula Borba Rodrigues *et al.* (2016) [1] मानसिक संकट के विकास में कारकों के रूप में उच्च जोखिम वाली गर्भधारण की विशेष विशेषताएँ: एक समीक्षा के अध्ययन के अन्तर्गत देखा गया कि सभी गर्भवती महिलाओं में से लगभग 22% की उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था के रूप में वर्गीकृत किया गया, जिसमें उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था के कारण असुरक्षित महसूस करती है जिसके कारण तनावपूर्ण भावनाओं का जोखिम बढ़ जाता है। इसके अध्ययन हेतु (1992–2014) में पिछले 22 वर्षो के लेख शामिल किये गये जिसमें पाया गया कि उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था वाली महिलाओं में तनाव का स्तर काफी अधिक था वे तनाव से जुझ रही थी तथा सामान्य गर्भावस्था वाली महिलाओं की तुलना में उनकी भावनात्मक स्थिति बदतर थी प्रभावित अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ करता है। कि उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था के दौरान मानसिक स्वास्थ्य की गुणवता को प्रभावित करता है।

Java. Deabelkova. *et al.* (2023) [2] किशोर गर्भावस्था के परिणाम और जोखिम कारक के अध्ययन में देखा गया किशोर माताओं के शिशुओं का जन्म के समय वजन कम होना, समय से पहले प्रसव की व्यापकता अधिक थी यह अध्ययन माताओं के बीच नवजात शिशुओं के परिणामों में महत्वपूर्ण आयु संबंधित असमानताआमं का पता लगाता है इन परिणामों का उपयोग करके उन समूहों की पहचान की जा सकती है। जिन्हें विशेष सहायता और कारवाई की आवश्यकता हैं।

Khan Ayesha. *et al.* (2016) [3], गर्भावस्था के दौरान जन्म के समय कम वजन की आवृत्ति और जोखिम कारक के अध्ययन के अन्तर्गत कॉस–सेक्शनल अध्ययन जनवरी 2007 से जुलाई 2008 के बीच प्रसूति एवं स्त्रीरोग विभाग लेयारी जनरल अस्पताल कराची में आयोजित हुआ। जिसमें 37 और उससे अधिक सप्ताह की महिलाओं को सम्मिलित किया गया। जिसमें देखा गया 10-6% रोगियों एलबीडब्ल्यू शिशुओं को जन्म दिया जिसमें 67% रोगियों को प्रसवपूर्व देखभाल सेवा नही मिली थी। जिसमें अधिकांश मरीज एनीमिया से पिड़ित थे। जिसमें 20% ऐसी महिलाएं थी जिनका हेमोग्लोबिन 7 ग्राम से कम था। यह अध्ययन एलबीडब्ल्यू कारकों के एक समूह से जुड़ा है जिनमें उचच जोखिम कारक अधिक पाया गया।

उमेसावा मित्सुमासा, *et al.* (2017), गर्भावस्था में उच्च रक्तचाप संबंधी विकारों की महामारी विज्ञान : व्यापकता, जोखिम कारक भविष्यवक्ता और पूर्वानुमान के अध्ययन मे देखा गया गर्भावस्था में उच्चरक्तचाप संबंधी विकार (एचडीपी) मातृ और प्रसवपूर्व रूग्णता और मृत्युदर का एक प्रमुख कारण है। महामारी विज्ञान के अध्ययनों ने हाल ही में एचडीपी के इतिहास और इसके उपप्रकारों और अन्य बीमारियों के भविष्य के खतरों के बीच संबंधो की जॉच की गई। जिससे यह ज्ञात हुआ कि एचडीपी के इतिहास और कोरोनरी हृदय रोग, दिल की विफलता स्ट्रोक, मधुमेह, डिसरिथिमिया, कार्डियोमायोपैथी के बीच संबंध की सूचना दी। निष्कर्षतः यह कह सकते है कि एचडीपी गर्भावस्था की एक दुर्लभ जटिलता नही है परन्तु एचडीपी का प्रभाव लम्बे समय तक बना रहता है इसलिए महिलाओं में पुरानी बीमारियों का इलाज करते समय चिकित्सकों को एचडीपी के प्रभावों पर विचार करना आवश्यक है।

उद्देश्य– उच्च जोखिम गर्भावस्था में आनेवाली समस्याओं की पहचान करना तथा उसके निदान के उपाय जानना ।

अध्ययन का क्षेत्र–

पटना शहर के पीएमसीएच, एनएमसीएच में आनेवाली महिलाओं से जो गर्भावस्था का सामना कर चुकी थी उनसे आंकड़े एकत्र किया गया।

अध्ययन की विधि–

अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक नमनूाकरण (Random Sampling) तकनीक को अपनाया गया। उत्तरदाताओं में महिलाओं की उम्र 18 से 45 वर्ष थी। जिनका चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया तथा 80 महिलाओं से आँकड़े एकत्र किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण–

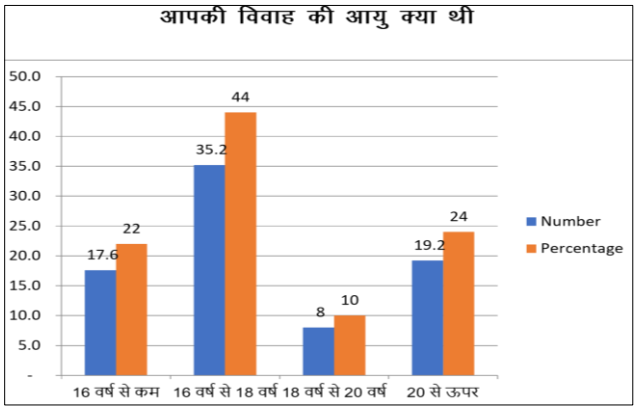

ग्रफ 1: आपकी विवाह की आयु क्या थी

उपरोक्त तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित ग्रफ के अनुसार जब महिलाओं से उनकी विवाह की आयु के बारे में पूछा गया तो 22% महिलाओं ने माना कि उनकी विवाह की आयु 16 वर्ष से कम थी। वही 16 से 18 वर्ष में विवाह होने की बात 44: महिलाओं ने स्वीकार की। 10% महिलाओं का मानना था कि उनकी विवाह की आयु 18 से 20 वर्ष के बीच थी। जिसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि 18 वर्ष विवाह की वैधानिक आयु है। वही 24% महिलाओं ने माना कि उनकी विवाह की आयु 20 वर्ष से ऊपर थी।

तलिका 2: गर्भावस्था के दौरान किसी जटिलता का पता चला (M- 80)

आवृत्ति	प्राप्त	%
हाँ	16	20
नहीं	64	80

उपरोक्त तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित ग्रफ के अनुसार गर्भावस्था के दौरान कई प्रकार की जटिलता आ सकती है जैसे एनीमिया, बच्चे का उल्टा होना, प्लैसेन्टा गलत जगह होना इत्यादि। सर्वेक्षण में शामिल की गयी महिलाओं से पूछने पर कि गर्भावस्था के दौरान किसी जटिलता का पता चला था तो इस प्रश्न के उत्तर में 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि उन्हें जटिलता का सामना करना पड़ा। उन्होंने कहा वजन अधिक होने के कारण डायबिटीज, उच्चरक्तचाप के कारण जटिलता का सामना करना पड़ा। 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि उन्हें किसी जटिलता का पता नहीं चला था उनकी डिलीवरी सामान्य हुई थी। उत्तरदाताआें का कहना था कि गर्भावस्था की

सामान्य लक्षण का सामना की। उन्हें किसी भी प्रकार की जटिलता महसूस नहीं हुई।

तलिका 3: हाईरिस्क प्रेग्नेंसी के बारे में जानकारी (M-80)

आवृत्ति	प्राप्त	%
हाँ	12.8	16
नहीं	51.2	64

उपरोक्त तालिका संख्या 3 में प्रदर्शित ग्राफ के अनुसार अध्ययन के क्रम में महिलाओं को उच्च जोखिम गर्भावस्था के बारे में जानकारी दी गयी। उन्हें यह बताया गया कि कई ऐसी गर्भ की अवस्थाएँ होती हैं जिनमें गर्भवती महिला या गर्भस्थ शिशु के जान को खतरा होता है। इस तरह की स्थिति तब आती है जब महिला का डाइबिटीज उच्च रक्तचाप, मोटापा इत्यादि हो। कई बार प्लैसेन्टा प्रीविया जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। इन सब को उच्च जोखिम गर्भावस्था का नाम दिया गया है। अध्ययन में शामिल महिलाओं में 16% का कहना है कि हाईरिस्क प्रेग्नेंसी के बारे में उन्हें जानकारी प्राप्त है। 64% महिलाओं को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं होने की बात सामने आई।

तालिका 4: उच्च जोखिम गर्भावस्था होने पर बच्चों के जन्म के लिए सुरक्षित स्थान (M-80)

⁄आवृत्ति	प्राप्त	%
मेडिकल कॉलजे अस्पताल	1.6	2
निजी अस्पताल	20.8	26
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	48	60
घर पर	9.6	12

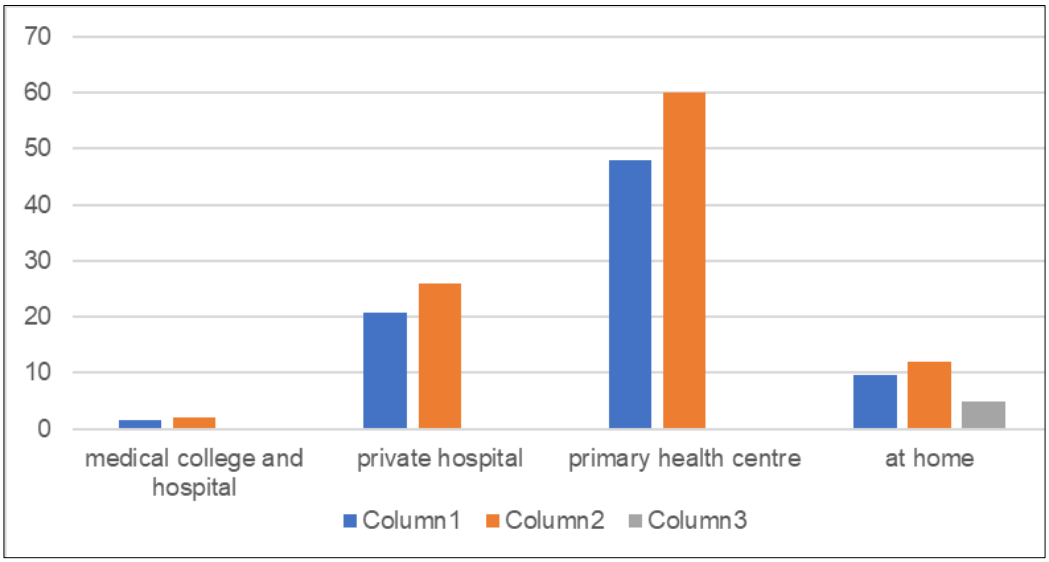

ग्राफ 2: उच्च जोखिम गर्भावस्था होने पर बच्चों के जन्म के लिए सुरक्षित स्थान (M-80)

उपरोक्त तालिका संख्या 4 में प्रदर्शित ग्राफ के अनुसार उच्च जोखिम गर्भावस्था के दौरान 2% महिलाओं ने मेडिकल कॉलेज अस्पताल को प्रसव हेतु सुरक्षित मानती है। जबकि 26% महिलाओं का मानना था निजी अस्पताल प्रसव के लिए ज्यादा सुरक्षित है। क्योंकि वहाँ अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है तथा डाक्टरों की उपलब्धता 24 घंटे रहती है। 60% महिलाओं का मानना था कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रसव के लिए ज्यादा सुरक्षित है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों में भी उपलब्ध है तथा कम पैसे में उन्हें सुविधा प्राप्त होती है। वही घर के निकट उपस्थित है। 12% महिलाओं ने माना घर पर प्रसव करना सुरक्षित है। परन्तु उनका कहना था कि घर से काफी दूरी पर अस्पताल स्थित है जिस वजह से समय पर पहुँचना संभव नहीं है।

तालिका 5 उच्च जोखिम गर्भावस्थ महिला सशक्तीकरण में बाधक बना (M=80)

आवृत्ति	प्राप्त	%
हाँ	16	20
नहीं	64	80

उपरोक्त तालिका संख्या 5 में प्रदर्शित ग्राफ के अनुसार उच्च जोखिम गर्भावस्था महिलाओं के सशक्तीकरण में बाधक सिद्ध हुआ उनसे बातचीत के दौरान पता चला वे अपने को उच्च जोखिम गर्भावस्थ के कारण उनमें अपराधबोध और हीनभावना आ गयी थी इन्हें था कि उनके कारण उनके पति को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ा। कुछ महिलाओं ने माना कि उच्च जोखिम के कारण ससुराल वालों की प्रताड़ना का सामना करना पड़ा जिससे वह अन्त में तनावग्रस्त हो जाती हैं। सर्वेक्षण में शामिल 20% महिलाओं ने माना कि उच्च जोखिम गर्भावस्था के कारण उनकी सशक्तीकरण में बाधक बनी। 80% महिलाओं का मानना था कि कि उन्हें उच्च जोखिम गर्भावस्था का सामना नहीं करना पड़ा और उनके सशक्तीकरण में रूकावट नहीं बनी।

निष्कर्ष

उच्च जोखिम गर्भावस्था की पहचान, रोकथाम एवं इलाज के प्रबंध हर क्षेत्र में उपलब्ध होने चाहिए अन्यथा इसके गंभीर आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पीड़ित महिलाओं पर हो सकते हैं। जिससे महिलाओं के सशक्तीकरण में कमी आ सकती है। इस संबंध में जानकारी का प्रचार–प्रसार गाँव की आखरी महिला तक होना चाहिए। अपने अध्ययन के बाद हमने पाया कि उच्च जोखिम गर्भावस्था की रोकथाम और इलाज के लिए निम्नलिखित सुविधाएँ होनी चाहिएः–हर गाँव में पर्याप्त संख्या में आशा सेविकाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।

कस्बों में एवं ब्लॉक लेवल पर अच्छे मातृत्व केन्द्र की सरकार द्वारा स्थापना होनी चाहिए जिसमें विशेषज्ञ, नर्स, मिडवाईफ तथा महिला चिकित्सा पदाधिकारी उपलब्ध होने चाहिए।

सब–डिवीजन तथा जिलास्तर पर बड़े अस्पताल उपलब्ध होने चाहिए। अस्पतालों में मुफ्त इलाज, दवा, टीकाकरण की व्यवस्था होनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Paula BR, *et al*. Special features of Lugh rusk Pregnancies as factors in the development of mental distress a review, Trends in Psychiatry and Psychotherapy. 2016;38:136-140.
2. Java Deabelkova, *et al*. Adolescent pregnancy outcomes and risk factors, International Journal of Environmental Research and Public Health. 2023;20(5):4113.
3. Khan Ayesha, *et al*. Frequency and risk factors of low birth weight in term pregnancy, Pakistan Journal of medical sciences. 2016;32(1):138-142.
4. Umesawa Mitumasa, *et al*. Epidemiology of hypertensive disorders in pregnancy prevalence, risk factors predictors and prognosis, Hypertension research. 2017;40:213-220.